Jas

Chapter 3

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1	Μὴ	πολλοὶ	διδάσκαλοι	γίνεσθε	ἀδελφοί	μου,	εἰδότες	ὅτι	μεῖζον	κρίμα
	न	बहुत	शिक्षक	बनो	भाइयो	मेरे	जानते-हुए	कि	बड़ा	दण्ड
	G3361	G4183	G1320	G1096	G0080	G1473	G1492	G3754	G3173	G2917

	λημψόμεθα.	
	पाएँगे	
	G2983	

> हे मेरे भाईयों, तुममें से बहुत से को उपदेशक बनने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। तुम जानते ही हो कि हम उपदेशकों का और अधिक कड़ाई के साथ न्याय किया जाएगा।

2	πολλὰ	γὰρ	πταίομεν	ἅπαντες.	εἴ	τις	ἐν	λόγῳ	οὐ	πταίει,	οὗτος
	बहुत	क्योंकि	चूकते-हैं	सब	यदि	कोई	में	वचन-में	नहीं	चूकता	यह
	G4183	G1063	G4417	G0537	G1487	G5100	G1722	G3056	G3756	G4417	G3778

τέλειος	ἀνήρ,	δυνατὸς	χαλιναγωγῆσαι	καὶ	ὅλον	τὸ	σῶμα.
सिद्ध	मनुष्य	समर्थ	लगाम-लगाने-में	भी	पूरे	उस	शरीर-पर
G5046	G0435	G1415	G5468	G2532	G3650	G3588	G4983

> मैं तुम्हें ऐसे इसलिए चेता रहा हूँ कि हम सबसे बहुत सी भूल होती ही रहती हैं। यदि कोई बोलने में कोई भी चूक न करे तो वह एक सिद्ध व्यक्ति है तो फिर ऐसा कौन है जो उस पर पूरी तरह काबू पा सकता है?

3	εἰ	δὲ,	τῶν	ἵππων	τοὺς	χαλινοὺς	εἰς	τὰ	στόματα	βάλλομεν,	εἰς
	यदि	और	उन	घोड़ों-के	वे	लगाम	में	उन	मुँहों-में	डालते-हैं	के-लिए
	G1487	G1161	G3588	G2462	G3588	G5469	G1519	G3588	G4750	G0906	G1519

τὸ	πείθεσθαι	αὐτοὺς	ἡμῖν,	καὶ	ὅλον	τὸ	σῶμα	αὐτῶν	μετάγομεν.
उस	वश-में-करने-को	उन-को	हमारे	तो	पूरे	उस	शरीर-को	उनके	मोड़ते-हैं
G3588	G3982	G0846	G1473	G2532	G3650	G3588	G4983	G0846	G3329

> हम घोड़ों के मुँह में इसलिए लगाम लगाते हैं कि वे हमारे बस में रहें और इस प्रकार उनके समूचे देह को हम वश में कर सकते हैं।

4	ἰδοὺ,	καὶ	τὰ	πλοῖα,	τηλικαῦτα	ὄντα,	καὶ	ὑπὸ	ἀνέμων	σκληρῶν
	देखो	भी	वे	जहाज	इतने-बड़े	होते-हुए	और	द्वारा	हवाओं-के	प्रचण्ड
	G3708	G2532	G3588	G4143	G5082	G1510	G2532	G5259	G0417	G4642

ἐλαυνόμενα,	μετάγεται	ὑπὸ	ἐλαχίστου	πηδαλίου,	ὅπου	ἡ	ὁρμὴ	τοῦ	
चलाए-जाते-हुए	मोड़े-जाते-हैं	द्वारा	छोटी-से-छोटी	पतवार-के	जहाँ	वह	इच्छा	उस	
G1643	G3329	G5259	G1646	G4079	G3699	G3588	G3730	G3588	

εὐθύνοντος	βούλεται.	
चलानेवाले-की	चाहती-है	
G2116	G1014	

> अथवा जलयानो का उदाहरण भी लिया जा सकता है। देखो, चाहे वे कितने ही बड़े होते हैं और शक्तिशाली हवाओं द्वारा चलाए जाते हैं, किन्तु एक छोटी सी पतवार से उनका नाविक उन्हें जहाँ कहीं ले जाना चाहता है, उन पर काबू पाकर उन्हें ले जाता है।

5

οὕτως	καὶ	ἡ	γλῶσσα	μικρὸν	μέλος	ἐστὶν,	καὶ	μεγάλα	αὐχεῖ.	ἰδοὺ,
इसी-प्रकार	भी	वह	जीभ	छोटा	अंग	है	और	बड़ी-बड़ी	डींग-मारती-है	देखो
G3779	G2532	G3588	G1100	G3398	G3196	G1510	G2532	G3173	G3166	G3708

ἡλίκον	πῦρ,	ἡλίκην	ὕλην	ἀνάπτει;
कितनी-छोटी	आग	कितने-बड़े	जंगल-को	जला-देती-है
G2245	G4442	G2245	G5208	G0381

इसी प्रकार जीभ, जो देह का एक छोटा सा अंग है, बड़ी-बड़ी बातें कर डालने की डींगे मारती है। अब तनिक सोचो एक जरा सी लपट समूचे जंगल को जला सकती है।

6

καὶ	ἡ	γλῶσσα	πῦρ,	ὁ	κόσμος	τῆς	ἀδικίας.	ἡ	γλῶσσα	καθίσταται
और	वह	जीभ	आग	वह	संसार	उस	अधर्म-का	वह	जीभ	ठहरी-है
G2532	G3588	G1100	G4442	G3588	G2889	G3588	G0093	G3588	G1100	G2525

ἐν	τοῖς	μέλεσιν	ἡμῶν,	ἡ	σπιλοῦσα	ὅλον	τὸ	σῶμα,	καὶ	φλογίζουσα
में	उन	अंगों-में	हमारे	जो	अशुद्ध-करनेवाली	पूरे	उस	शरीर-को	और	जलानेवाली
G1722	G3588	G3196	G1473	G3588	G4695	G3650	G3588	G4983	G2532	G5394

τὸν	τροχὸν	τῆς	γενέσεως,	καὶ	φλογιζομένη	ὑπὸ	τῆς	γεέννης.
उस	चक्र-को	उस	जन्म-के	और	जलाई-जानेवाली	द्वारा	उस	नरक-के
G3588	G5164	G3588	G1078	G2532	G5394	G5259	G3588	G1067

हाँ, जीभ एक लपट है। यह बुराई का एक पूरा संसार है। यह जीभ हमारे देह के अंगों में एक ऐसा अंग है, जो समूचे देह को भ्रष्ट कर डालता है और हमारे समूचे जीवन चक्र में ही आग लगा देता है। यह जीभ नरक की आग से धधकती रहती है।

7

πᾶσα	γὰρ	φύσις	θηρίων	τε	καὶ	πετεινῶν,	ἑρπετῶν	τε	καὶ	ἐναλίων,
हर	क्योंकि	प्रकृति	जानवरों-की	और	और	पक्षियों-की	रेंगनेवालों-की	और	और	समुद्री-जीवों-की
G3956	G1063	G5449	G2342	G5037	G2532	G4071	G2062	G5037	G2532	G1724

δαμάζεται	καὶ	δεδάμασται	τῇ	φύσει	τῇ	ἀνθρωπίνῃ;
वश-में-की-जाती-है	और	वश-में-की-गई-है	उस	प्रकृति-से	उस	मानव-की
G1150	G2532	G1150	G3588	G5449	G3588	G0442

देखो, हर प्रकार के हिंसक पशु, पक्षी, रेंगने वाले जीव जंतु, पानी में रहने वाले प्राणी मनुष्य द्वारा वश में किए जा सकते हैं और किए भी गए हैं।

8

τὴν	δὲ	γλῶσσαν	οὐδεὶς	δαμάσαι	δύναται	ἀνθρώπων;	ἀκατάστατον	κακόν,
उस	पर	जीभ-को	कोई	वश-में-कर	नहीं-सकता	मनुष्यों-में	अस्थिर	बुराई
G3588	G1161	G1100	G3762	G1150	G1410	G0444	G0182	G2556

μεστὴ	ἰοῦ	θανατηφόρου.
भरी-हुई	विष-से	प्राणघातक
G3324	G2447	G2287

किन्तु जीभ को कोई मनुष्य वश में नहीं कर सकता। यह घातक विष से भरी एक ऐसी बुराई है जो कभी चैन से नहीं रहती।

9

ἐν	αὐτῇ	εὐλογοῦμεν	τὸν	Κύριον	καὶ	Πατέρα,	καὶ	ἐν	αὐτῇ	καταρώμεθα
में	इससे	धन्यवाद-देते-हैं	उस	प्रभु	और	पिता-को	और	में	इसी-से	शाप-देते-हैं
G1722	G0846	G2127	G3588	G2962	G2532	G3962	G2532	G1722	G0846	G2672

τοὺς	ἀνθρώπους,	τοὺς	καθ’	ὁμοίωσιν	Θεοῦ	γεγονότας.
उन	मनुष्यों-को	जो	में	समानता	परमेश्वर-की	बने-हैं
G3588	G0444	G3588	G2596	G3669	G2316	G1096

हम इसी से अपने प्रभु और परमेश्वर की स्तुति करते हैं और इसी से लोगों को जो परमेश्वर की समरूपता में उत्पन्न किए गए हैं, कोसते भी हैं।

10 ἐκ से G1537 | τοῦ उसी G3588 | αὐτοῦ इसी G0846 | στόματος मुँह-से G4750 | ἐξέρχεται निकलती-है G1831 | εὐλογία आशीर्वाद G2129 | καὶ और G2532 | κατάρα. शाप G2671 | οὐ नहीं G3756 | χρή, चाहिए G5534 | ἀδελφοί भाइयो G0080

μου, मेरे G1473 | ταῦτα ये G3778 | οὕτως ऐसे G3779 | γίνεσθαι. होना G1096

> एक ही मुँह से आशीर्वाद और अभिशाप दोनों निकलते हैं। मेरे भाईयों, ऐसा तो नहीं होना चाहिए।

11 μήτι क्या G3385 | ἡ वह G3588 | πηγὴ सोता G4077 | ἐκ से G1537 | τῆς उसी G3588 | αὐτῆς इसी G0846 | ὀπῆς, छेद-से G3692 | βρύει बहाता-है G1032 | τὸ वह G3588 | γλυκὺ मीठा G1099 | καὶ और G2532 | τὸ वह G3588

πικρόν? कड़वा G4089

> सोते के एक ही मुहाने से भला क्या मीठा और खारा दोनों तरह का जल निकल सकता है?

12 μὴ क्या G3361 | δύναται, सकता-है G1410 | ἀδελφοί भाइयो G0080 | μου, मेरे G1473 | συκῆ अंजीर-का-पेड़ G4808 | ἐλαίας जैतून G1636 | ποιῆσαι? पैदा-कर G4160 | ἢ या G2228 | ἄμπελος अंगूर-की-बेल G0288 | σῦκα? अंजीर G4810

οὔτε न G3777 | ἁλυκὸν, खारा G0252 | γλυκὺ मीठा G1099 | ποιῆσαι पैदा-कर G4160 | ὕδωρ. पानी G5204

> मेरे भाईयों क्या अंजीर के पेड़ पर जैतून या अंगूर की लता पर कभी अंजीर लगते हैं? निश्चय ही नहीं। और न ही खारे स्रोत से कभी मीठा जल निकल पाता है।

13 Τίς कौन G5101 | σοφὸς बुद्धिमान G4680 | καὶ और G2532 | ἐπιστήμων समझदार G1990 | ἐν में G1722 | ὑμῖν; तुम-में G4771 | δειξάτω दिखाए G1166 | ἐκ से G1537 | τῆς उस G3588 | καλῆς भले G2570 | ἀναστροφῆς चाल-चलन-से G0391

τὰ वे G3588 | ἔργα काम G2041 | αὐτοῦ, अपने G0846 | ἐν में G1722 | πραΰτητι नम्रता-से G4240 | σοφίας; बुद्धि-की G4678

> भला तुम में, ज्ञानी और समझदार कौन है? जो है, उसे अपने व्यवहार से यह दिखाना चाहिए कि उसके कर्म उस सज्जनता के साथ किए गए हैं जो ज्ञान से जुड़ी है।

14 εἰ यदि G1487 | δὲ पर G1161 | ζῆλον जलन G2205 | πικρὸν कड़वी G4089 | ἔχετε, रखते-हो G2192 | καὶ और G2532 | ἐριθείαν झगड़ालूपन G2052 | ἐν में G1722 | τῇ उस G3588 | καρδίᾳ हृदय-में G2588 | ὑμῶν, तुम्हारे G4771 | μὴ न G3361

κατακαυχᾶσθε घमण्ड-करो G2620 | καὶ और G2532 | ψεύδεσθε झूठ-न-बोलो G5574 | κατὰ के-विरुद्ध G2596 | τῆς उस G3588 | ἀληθείας. सत्य-के G0225

> किन्तु यदि तुम लोगों के हृदयों में भयंकर ईर्ष्या और स्वार्थ भरा हुआ है, तो अपने ज्ञान का ढोल मत पीटो। ऐसा करके तो तुम सत्य पर पर्दा डालते हुए असत्य बोल रहे हो।

15 οὐκ नहीं G3756 | ἔστιν है G1510 | αὕτη यह G3778 | ἡ वह G3588 | σοφία बुद्धि G4678 | ἄνωθεν ऊपर-से G0509 | κατερχομένη, उतरनेवाली G2718 | ἀλλὰ पर G0235 | ἐπίγειος, सांसारिक G1919 | ψυχική, प्राणिक G5591

δαιμονιώδης. शैतानी G1141

> ऐसा “ज्ञान” तो ऊपर अर्थात् स्वर्ग से, प्राप्त नहीं होता, बल्कि वह तो भौतिक है। आत्मिक नहीं है। तथा शैतान का है।

16 ὅπου γὰρ ζῆλος καὶ ἐριθεία, ἐκεῖ ἀκαταστασία καὶ πᾶν φαῦλον πρᾶγμα.
जहाँ क्योंकि जलन और झगड़ालूपन वहाँ गड़बड़ी और हर बुरा काम
G3699 G1063 G2205 G2532 G2052 G1563 G0181 G2532 G3956 G5337 G4229

> क्योंकि जहाँ ईर्ष्या और स्वार्थपूर्ण महत्त्वकाँक्षाएँ रहती हैं, वहाँ अव्यवस्था और हर प्रकार की बुरी बातें रहती है।

17 ἡ δὲ ἄνωθεν σοφία, πρῶτον μὲν ἁγνή ἐστιν, ἔπειτα εἰρηνική, ἐπιεικής,
वह पर ऊपर-से बुद्धि पहले तो पवित्र है फिर मेल-करानेवाली नम्र
G3588 G1161 G0509 G4678 G4412 G3303 G0053 G1510 G1899 G1516 G1933

εὐπειθής, μεστὴ ἐλέους καὶ καρπῶν ἀγαθῶν, ἀδιάκριτος, ἀνυπόκριτος.
कहना-माननेवाली भरी-हुई दया और फलों-से अच्छे निष्पक्ष निष्कपट
G2138 G3324 G1656 G2532 G2590 G0018 G0087 G0505

> किन्तु स्वर्ग से आने वाला ज्ञान सबसे पहले तो पवित्र होता है, फिर शांतिपूर्ण, सहनशील, सहज-प्रसन्न, करुणापूर्ण होता है। और उससे उत्तम कर्मों की फ़सल उपजती है। वह पक्षपात-रहित और सच्चा भी होता है।

18 καρπὸς δὲ δικαιοσύνης ἐν εἰρήνῃ σπείρεται, τοῖς ποιοῦσιν εἰρήνην.
फल और धार्मिकता-का में शान्ति-में बोया-जाता-है उन-के-द्वारा करनेवालों-के-द्वारा शान्ति
G2590 G1161 G1343 G1722 G1515 G4687 G3588 G4160 G1515

> शांति के लिए काम करने वाले लोगों को ही धार्मिक जीवन का फल प्राप्त होगा यदि उसे शांतिपूर्ण वातावरण में बोया गया है।